केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में देश के 60वें गणतन्त्र दिवस को मनाया गया।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में आज देश के 60वें गणतन्त्र दिवस को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने ध्वजारोहण किया। सेना से रिटायर्ड एवं संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई तथा सभी स्टाफ व बच्चों ने राष्ट्रीय गीत गाया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने अपने अभिभाषण में संस्थान के सभी स्टाफ व उनके परिवार को गणतन्त्र की बहुत–बहुत बधाईयां दी। निदेशक ने देश की गौरवान्वित हस्ती डा. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में भारत के संविधान निर्माण हेतु गठित ''संविधान निर्माण सभा'' जिसमें डा. राजेन्द्र प्रसाद के अलावा डा. भीमराव अम्बेडकर, सादुल्लाखां, गोपाला स्वामी आयंगर, सरकृष्णा स्वामी एवं रणबीर सिंह हुड्डा आदि जैसे महान व्यक्तियों को याद किया

जिन्होंने देश की आजादी के बाद ऐसा संविधान तैयार किया जो प्रजातन्त्र के अनुकूल हो तथा देश की जनता को भागीदार बनाते हुये देश को उन्नति की ओर अग्रसर करें क्योंकि अनुशासन व नियमों के बिना केवल आजादी मिलना ही काफी नहीं था। उन्होंने कहा कि देश का संविधान ऐसे समय में बना जब तानाशाही व साम्यवाद का बोलबोला था। निदेशक ने कहा कि हमें धर्म, जाति आदि के झगड़ों से ऊपर उठकर संस्थान व देश के हित में कार्य करने चाहिये। उन्होंने वैज्ञानिकों से भी अपील की कि वे ऐसे शोध करें जो कृषक समुदाय के हित में हो और उन्हें सीधा फायदा हो सके। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक द्वारा उत्कृष्ट कर्मचारियों को कुछ नकद राशि व प्रमाणपत्र भी दिये गये।

संस्थान के मनोरंजन क्लब के अध्यक्ष डा. नीरज कुलश्रेष्ठ ने भी स्टाफ को गणतन्त्र की बधाई दी तथा क्लब द्वारा संस्थान के स्टाफ व उनके परिवार/बच्चों के लिये खेलकूद जैसे बच्चों के लिए 50 व 100 मीटर दौड, औरतों व लड़कियों के लिये Spoon Race, Musical chair, Three Leg race, बड़ों के लिए रस्सा खीचना आदि कराये गये तथा विजेताओं को संस्थान के निदेशक द्वारा प्रमाण–पत्र व इनाम से नवाजा गया।

यह भी उल्लेखनीय है कि उपायुक्त करनाल के आमंत्रण पर इस संस्थान द्वारा विकसित क्षारीय–लवणीय भूमि सुधार प्रबन्धन एवं खारे पानी के कृषि में उपयोग तथा कृषि की अन्य लाभकारी तकनीकियों की एक बहुत ही सुन्दर ''झांकी'' कर्ण स्टेडियम करनाल में 26 जनवरी 2009 के अवसर पर अन्य झांकियों के साथ प्रदर्शित भी की गई।